ISSN: 3048-9849 (Online)
Volume: 2, Issue: 1, Issue Publication Date: 31-Mar-2025

शोध प्रपत्र

भारतीय सुगम संगीत में रिकॉर्डिंग की भूमिका

शोधार्थी अर्पित शर्मा (नेट जेआरएफ)
संगीत विभाग
पंजाब विश्वविद्यालय, चंडीगढ़

भारतीय संगीत की विविधता उसकी अनूठी परंपरा संगीत जगत में विशेष स्थान रखती है। जहां शास्त्रीय संगीत की गहनता और भक्ति भाव के साथ–साथ लोक संगीत की जीवनसत्ता नजर आती है, वही सुगम संगीत ने भी अपने मधुर स्वर सरलता और लोकप्रियता के बल पर भारतीय संगीत के परिदृश्य में महत्वपूर्ण योगदान दिया है। सुगम संगीत जिसे लाइट म्यूजिक भी कहा जाता है श्रोताओं के दिलों को छूने, मनोरंजन प्रदान करने तथा भावनाओं को सहजता से अभिव्यक्त करने का माध्यम रहा है। तकनीकी प्रगति और रिकॉर्डिंग के क्षेत्र में हुए बदलाव ने संगीत के उत्पादन,प्रस्तुति तथा प्रचार प्रसार के तरीके में क्रांतिकारी परिवर्तन किए हैं। डिजिटल युग के आगमन के साथ संगीतकार, निर्माता और रिकॉर्डिंग तकनीशियन ने पारंपरिक तरीकों से हटकर नई तकनीकों का उपयोग शुरू कर दिया है।

भारतीय संगीत की जड़ें प्राचीन सभ्यता में स्थित हैं, जहां शास्त्रीय और लोक परंपराओं के संगम से सुगम संगीत की उत्पत्ति हुई। शास्त्रीय संगीत की जटिल रचनाओं के विपरीत सुगम संगीत को व्यापक जनसाधारण द्वारा आसानी से समझा और सराहा जा सकता था। यह संगीत आमतौर पर हल्के स्वर, सरल रागों एवं तालों पर आधारित होता है और इसमें सामाजिक भावनात्मक और सांस्कृतिक तत्वों का समावेश देखा जाता है। इतिहास में देखे तो 20वीं सदी के मध्य से ही रेडियो, टेलीविजन एवं रिकॉर्डिंग यंत्रों के आगमन ने सुगम संगीत को लोकप्रियता के नए आयाम प्रदान किए ।उस समय के लोकप्रिय गायको एवं संगीतकारों ने पारंपरिक धुनों के साथ–साथ आधुनिक वाद्य यंत्रों का मिश्रण प्रस्तुत किया, जिससे यह शैली जनसाधारण के बीच अत्यंत लोकप्रिय हुई। भारतीय संगीत की रिकॉर्डिंग का इतिहास 20वीं शताब्दी से ही शुरू हुआ जब ग्रामोफोन रिकॉर्डस का प्रचलन बढ़ा तब भारत में भी संगीत रिकॉर्डिंग का दौर शुरू हो गया।1930 के दशक में एचएमवी जैसी कंपनियों ने भारतीय संगीत को रिकॉर्ड और वितरित करने का कार्य शुरू किया। 1950 और 1960 के दशक में जब रेडियो और टेलीविजन का विस्तार हुआ तब रिकॉर्डिंग तकनीक में भी बदलाव आया। स्टूडियो रिकॉर्डिंग की गुणवत्ता में सुधार हुआ और संगीतकारों को अधिक स्वतंत्रता मिली।1980 और 1990 के दशक में कैसेट और सीडी फॉर्मेट ने रिकॉर्डिंग इंडस्ट्री में क्रांति ला दी। 21वीं सदी में डिजिटल रिकॉर्डिंग और स्ट्रीमिंग प्लेटफार्म जैसे यूट्यूब स्पॉटिफाई और गाना कॉम ने भारतीय सुगम संगीत को वैश्विक स्तर पर पहुंचाया।

रिकॉर्डिंग का संगीत पर प्रभाव

1. संगीत की स्थायित्वता रिकॉर्डिंग ने संगीत को अमर बना दिया है।पुराने कलाकारों की आवाज और धुने आज भी सुनी जा सकती है ।
2. संगीत का वैश्वीकरण– रिकॉर्डिंग और डिजिटल माध्यमों ने भारतीय संगीत को विश्व भर में लोकप्रिय बनाया।
3. प्रतिभाओं को उभारना रिकॉर्डिंग तकनीक की आसानी और उपलब्धता ने नये कलाकारों को एक मंच प्रदान किया।
4. तकनीकी नवाचार –आधुनिक रिकॉर्डिंग ने ध्वनि की गुणवत्ता को अत्यधिक सुधार दिया है, जिससे संगीत को और भी आकर्षक बनाया जा सका है।

भारतीय सुगम संगीत में आधुनिक रिकॉर्डिंग तकनीकें –

1. डिजिटल ऑडियो वर्कस्टेशन(DAW) वर्तमान में कलाकार डिजिटल सॉफ्टवेयर जैसे कि प्रोटूल्स, क्यूबेस, एबलटन लाइव का उपयोग कर उच्च गुणवत्ता की रिकॉर्डिंग कर सकते हैं।
2. ऑटो ट्यून और अन्य सुधार तकनीक– आवाज को सुधारने और शुद्ध करने के लिए ऑटो ट्यून, इक्वलाइजेशन और रीवरब जैसे टूल्स का उपयोग किया जाता है।
3. होम स्टूडियो और मोबाइल रिकॉर्डिंग– सस्ते माइक्रोफोन्स और रिकॉर्डिंग सॉफ्टवेयर की उपलब्धता ने घर पर ही रिकॉर्डिंग को संभव बना दिया है।

1. रिकॉर्डिंग तकनीक के विकास का संगीत उद्योग पर प्रभाव–रिकॉर्डिंग तकनीक के विकास से संगीत की ध्वनि गुणवत्ता में अत्यधिक सुधार हुआ है।प्रारंभिक दिनों में जब रिकॉर्डिंग तकनीक समिति थी तब रिकॉर्डिंग में ध्वनि की शुद्धता एवं गहराई की कमी रहती थी। परंतु डिजिटल रिकॉर्डिंग के आगमन सी केवल ध्वनि की गुणवत्ता में सुधार हुआ बल्कि कलाकार के प्रदर्शन को भी उसी प्रकार संपूर्ण रूप से प्रस्तुत किया जा सकता है। आधुनिक डिजिटल तकनीक जैसे कि मल्टी ट्रैक रिकॉर्डिंग,साउंड एडिटिंग सॉफ्टवेयर एवं मिक्सिंग तकनीक ने संगीत में समृद्धि और स्पष्टता ला दी है।

2. पारंपरिक बनाम आधुनिक प्रस्तुति– पारंपरिक सुगम संगीत में लोक धरोहर भक्ति रस एवं सामाजिक कहानियों का उल्लेख मिलता था।परंतु समय के साथ–साथ जब तकनीकी प्रगति हुई, तब इसमें नई रचनात्मक, प्रयोगात्मकता ने प्रवेश किया।रिकॉर्डिंग स्टूडियोज, माइक्रोफोन एवं साउंड इफैक्ट्स के इस्तेमाल से संगीत के स्वर, ताल एवं रचनात्मकता में नवाचार देखने को मिला। आधुनिक संगीतकारों ने इन तकनीकों का इस्तेमाल कर अपने संगीत को और अधिक व्यापक दशकों तक पहुंचाया।

3. लाइव प्रदर्शन और रिकॉर्डिंग का एकीकरण– तकनीकी प्रगति ने लाइव प्रदर्शन तथा रिकॉर्डिंग के बीच की खाई को भी पाट दिया है। आजकल लाइव कांसर्ट्स, संगीत कार्यक्रम एवं फेस्टिवल में डिजिटल रिकॉर्डिंग का इस्तेमाल आम हो गया है। लाइव प्रदर्शन को रिकॉर्ड करके तुरंत डिजिटल फॉर्मेट में प्रस्तुत किया जा सकता है। जिससे दर्शक एवं श्रोताओं को लाइव एवं अनुभव के साथ–साथ उच्च गुणवत्ता वाली रिकॉर्डिंग भी उपलब्ध हो जाती है यह तकनीकी एकीकरण न केवल कलाकारों के लिए एक अतिरिक्त आय का स्रोत बन चुकी है बल्कि उनके फैंस तक भी उनके प्रदर्शन की पहुंच को विस्तृत करता है।

डिजिटल युग में भारतीय सुगम संगीत–

1. इंटरनेट एवं ऑनलाइन प्लेटफॉर्म्स का उदय– डिजिटल युग में संगीत की दुनिया में नए अवसर और चुनौतियां दोनों ही प्रस्तुत किए हैं। इंटरनेट के आगमन के साथ संगीतकारों के लिए अपने काम को वैश्विक स्तर पर प्रस्तुत करने का अवसर प्राप्त हुआ। यूट्यूब, स्पॉटिफाई गाना, जियोसावन जैसे ऑनलाइन प्लेटफॉर्म्स ने सुगम संगीत के प्रसार में महत्वपूर्ण भूमिका निभाई है

2. रिकॉर्डिंग उपकरण एवं स्टूडियो का विकास– बीते दशकों में रिकॉर्डिंग उपकरण एवं स्टूडियो की गुणवत्ता में भी व्यापक सुधार हुआ है।आरंभिक समय में जब रिकॉर्डिंग उपकरण महंगे और सीमित थे तब संगीतकारों के लिए उच्च गुणवत्ता वाली रिकॉर्डिंग प्राप्त करना एक चुनौती थी।आज के डिजिटल युग में कंप्यूटर, सॉफ्टवेयर, पोर्टेबल रिकॉर्डिंग डिवाइसेज के माध्यम से संगीत का रिकॉर्डिंग करना न केवल सस्ता हो गया है बल्कि तकनीकी दृष्टि से भी अत्यंत उन्नत हो गया है। उच्च तकनीक वाले स्टूडियो में अब ऐसे उपकरण उपलब्ध है जो ध्वनि के हर पहलू को कैप्चर कर सकते हैं ।

3. मल्टी ट्रैक रिकॉर्डिंग और आधुनिक तकनीकें– मल्टीट्रैक रिकॉर्डिंग तकनीक ने संगीत के निर्माण में एक नई क्रांति ला दी है अब कलाकार एक ही समय में विभिन्न उपकरणों और वाद्य यंत्रों के साथ काम कर सकते हैं। प्रत्येक वाद्य यंत्र पर या स्वर को अलग–अलग ट्रैक पर रिकॉर्ड किया जाता है। जिसे बाद में मिक्सिंग एवं मास्टरिंग के समय उन्हें स्वतंत्र रूप से एडजस्ट किया जा सकता है। इस तकनीक के आगमन से संगीत की रचनात्मकता में अत्यधिक वृद्धि हुई है। रिकॉर्डिंग इंजीनियर्स और म्यूजिक प्रोड्यूसर्स ने विभिन्न तकनीकी टूल्स का इस्तेमाल कर संगीत में गहराईय स्पष्टता एवं विविधता लाई है।

डिजिटल रिकॉर्डिंग की नवीनतम तकनीकी

आज के डिजिटल युग में रिकॉर्डिंग तकनीक अत्यंत उन्नत हो चुकी है। अब मोबाइल फोन, लैपटॉप और अन्य पोर्टेबल डिवाइसों के माध्यम से भी उच्च गुणवत्ता वाली रिकॉर्डिंग संभव है। ऐसे एप्स और सॉफ्टवेयर उपलब्ध हैं जो रिकॉर्डिंग, एडिटिंग, मिक्सिंग एवं मास्टरिंग की संपूर्ण प्रक्रिया को आसान बनाते हैं। आर्टिफिशियल इंटेलिजेंस(AI) आधारित टूल्स अब संगीत की क्वालिटी को ऑटोमेटेकली सुधारने में सक्षम हैं।उदाहरण के तौर पर वोकल रिडक्शन, ऑटो– ट्यूनिंग एवं अन्य तकनीकी एडजेस्टमेंटस कलाकारों को अपनी रिकॉर्डिंग में बारीकी से काम करने का अवसर प्रदान करती है।

मुख्य संकेत बिंदु – सुगम संगीत, रिकॉर्डिंग, रिकॉर्डिंग प्रक्रिया, संगीत का प्रचार,आधुनिक तकनीकें, सोशल मीडिया, इंटरनेट एवं ऑनलाइन प्लेटफॉर्म

सारांश–

निष्कर्षत कहा जा सकता है कि रिकॉर्डिंग ने सुगम संगीत उद्योग को बहुत लाभ पहुंचाया है।फिल्मी संगीत, भक्ति संगीत गजल, भजन और पॉप संगीत सभी रिकॉर्डिंग की वजह से अधिक प्रसिद्ध हुए। कंपनियां भी अब डिजिटल प्लेटफॉर्म के माध्यम से संगीत को वैश्विक स्तर पर पहुंचा रही हैं जिससे संगीतकारों को अधिक लाभ हो रहा है।

भारतीय सुगम संगीत में रिकॉर्डिंग की भूमिका अत्यंत महत्वपूर्ण है इसने न केवल संगीत को संरक्षित किया है बल्कि इसे नयी ऊंचाइयों तक पहुंचाया है। आधुनिक तकनीकों के साथ संगीत की रिकॉर्डिंग और वितरण में और अधिक नवाचार होते रहेंगे जिससे भारतीय संगीत की वैश्विक पहचान और भी सशक्त होगी।

संदर्भ ग्रंथ सूची–

* संगीत रत्नावली : अशोक कुमार यमन, अभिषेक पब्लिकेशंस, अंसारी रोड दिल्ली, 2018
* भारतीय संगीत को मीडिया व संस्थाओं का योगदान : डॉ राधिका शर्मा, संजय प्रकाशन दरयागंज, नई दिल्ली–2, संस्करण 2023
* भारतीय संगीत में वैज्ञानिक उपकरणों का प्रयोगः अनिता गौतम, कनिष्क पब्लिशर्स डिस्ट्रीब्यूटर्स, नई दिल्ली, संस्करण 2020
* संगीत मैन्युअलः डॉ मृत्युंजय शर्मा, एच.जी. पब्लिकेशंस, न्यू दिल्ली,संस्करण 2020, वॉल्यूम 1
* हिंदुस्तानी संगीत परिवर्तनशीलताः डॉ अमित कुमार बनर्जी, सारिका पब्लिकेशन हाउस, नई दिल्ली, 1992